The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol 1, Issue 1 - 2017

पं0 मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

किरन गुप्ता*

प्राचीन भारतीय संस्कृति का यशोगान करना प्रत्येक भारतीय नागरिक का परम कर्तव्य है। जीवन के आदर्शों का जो रुप उस काल में स्थापित किया गया वह आज भी भारतीय जनमानस को प्रभावित कर रहा है और ऐसी आशा की जाती है कि भविष्य में भी प्रभावित करता रहेगा।

मालवीय जी का जीवन, चिन्तन और योगदान ऐतिहासिक तथ्यों से बंधा है। वे स्वयं व्यक्ति को समष्टि का अंक मानते थे और निःस्वार्थ सेवा द्वारा जीवन मे समष्टि को आत्मसात करना मानव का पुनीत कर्तव्य समझते थे। उनका जीवन समाज के समरस था। उनका विकास सामाजिक स्थिति के संदर्भ में ही हुआ था।

शिक्षा के क्षेत्र में मालवीय जी ने पराधीन भारत में जो महत्वर्पूण कार्य किया है वह विश्व इतिहास में एक अद्भुत घटना है। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रीय चरित्र के भविष्य के लिये आने वाली पीढी को शिक्षा की उत्तमोत्तम व्यवस्था प्रदान की जानी चाहिए और राष्ट्र के विविध धर्मावलम्बियों में राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति की भावना शिक्षा द्वारा विकसित की जानी चाहिए। यही कारण है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय राष्ट्रिय आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु था।

मालवीय जी शिक्षा के माध्यम से ऐसे व्यक्ति के निर्माण के पक्षपाती थे, जो चरित्रवान होने के साथ–साथ आर्थिक, प्राविधिक राजनीतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। वह अपनी जीविका प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता हो। उसे जीविका प्राप्त करने के लिए दर–दर की ठोकरें न खानी पड़े मालवीय जी की मान्यता है कि 'यदि शिक्षा द्वारा इस प्रकार के व्यक्ति का निर्माण नहीं होता तो वह शिक्षा निरर्थक है।

मालवीय जी का जन्म इलाहाबाद के एक गौड. ब्राह्मण परिवार में 25 दिसम्बर, 1861 को हुआ था। मूल रूप से यह परिवार मालवा निवासी था और इलाहाबाद में मल्लई परिवार के नाम से प्रसिद्ध था। पं0 मदन मोहन मालवीय जी ने आगे चलकर मल्लई के स्थान पर मालवीय कर लिया था। इनके पिता का नाम पं0 ब्रजनाथ व्यास था। वे बड़े धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे और कथा वार्ता से जीवन निर्वाह करते थे। इनकी माता का नाम श्रीमती मूना देवी था। जो बहुत सरल एवं उदार स्वभाव की महिला थी। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न न होने के बाद भी ये दूसरों की सहायता के लिये सदैव तत्पर रहती थी। बालक मदनमोहन पर अपने माता–पिता का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। आगे चलकर पं0 मदनमोहन मालवीय जो कुछ बने उसकी नींव बचपन में ही पड़ चुकी थी।

पं0 मदन मोहन मालवीय बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनको शीर्षस्थ विद्वानों ने महान पुरूषों की श्रेणी में रखा हैं।

*शोध–छात्रा,नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, कोटवाँ जमुनीपुर, इलाहाबाद।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

पं0 मदन मोहन मालवीय जी श्रेष्ठ विचारों के उन्नायक जिन्होंने आत्म–उन्नयन, आत्म जागृत के आधार पर देश को नयी दिशा देने का प्रयास किया। यद्यपि कि पं0 मदन मोहन मालवीय जी का अपना कोई दार्शनिक चेन्तन नही था परन्तु इन्होंने वेंदो, उपनिषदों स्मृतियों, पुराणों और शैव एवं वैष्णव सम्प्रदायों में जो इन्हें समाज और देश के लिए अनुकूल लगा उसे इन्होंने स्वीकार किया और देशवासियों को स्वीकार करने की सलाह दी।

मालवीय जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा व्यवस्था सैद्धान्तिक पक्ष पर बल न देकर व्यावहारिक पक्ष पर अधिक दृष्टिगत करते है तथा वह वर्तमान युवा पीढ़ी के सामाजिक, शैक्षिक, नैतिक विकास को माध्यम बनाते हुए भारत को एक सर्वगुण सम्पन्न राष्ट के रुप में स्थापित करने का मार्ग दर्शन कराते है। जिससे भारत विश्व पटल पर अपनी शैक्षिक उपलब्धि के बल पर सर्म्पूण विश्व का नेतृत्व व कल्याण कर सके।

इतना महान व्यक्तित्व शिक्षा जगत के लिए बहुत ही सार्थक हुआ, जिससे मानव को समग्र रुप से अर्थात आध्यात्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक रूप से पूर्ण विकसित होने का आचार–विचार किया। उनके विचार जीवन दर्शन जीवन में प्रयोग करके सामने आये। इसलिए मदन मोहन मालवीय जी को व्यावहारिक व कुशलता से ओत–प्रोत विचारक मान सकते है।

मदन मोहन मालवीय के विचार मानव जगत के लिए सदैव प्रेरणा प्रद रहे हैं। आज के समय को ध्यान में रखते हुए यदि हम मालवीय जी के शैक्षिक उन्नयन के प्रभाव को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आकलन करें तो यह एक महान प्रयोग होगा।

पं0 मदन मोहन मालवीय बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। इन्होंने तत्कालीन भारत धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षिक सभी क्षेत्रों में भाग लिया, नेतृत्व सम्भाला और डूबते हुए भारत को बचाने में बहुत बड़ा योगदान दिया। इन्होंने जीवन भर हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान के उत्थान के लिए संर्घष किया। ये आदर्शों के भी आदर्श थे। उस समय इनके पीछे गुणवानों का एक समूह था ये उनके मार्गदर्शक थे। तभी इन्हें महामना और राष्ट गुरू जैसे विशेषणों से सम्बोधित किया जाता है। शिक्षा के आदर्श, शिक्षा के सिद्धान्त, शिक्षा की राष्टिय योजना और धर्म पर आधारित शिक्षा का रूप जो उन्होंने प्रदान किया और उसका व्यावहारिक रूप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को दिया, उससे बढ़कर योगदान और क्या हो सकता है। यही कारण है कि उन्हें शिक्षा का ही नही पूरे राष्ट का एक बडा निर्माता माना गया है।

राष्टीय शिक्षा को विकसित करने के साथ–साथ पं0 मदन मोहन मालवीय जी का एक योगदान शिक्षा को यथार्थ जीवन से सम्बंधित करने में पाया जाता है। मालवीय जी ने एक ओर धर्म को शिक्षा का आधार बनाया और दूसरी ओर प्राचीन भारतीय जीवन के वर्णाश्रम धर्म को भी शिक्षा का आधार बनाया। इसके अलावा मालवीय जी शिक्षा को वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास का साधन माना है। आध्यात्मिक जीवन एवं भौतिक जीवन में जो समन्वय उन्होने शिक्षा के द्वारा किया वह उनका प्रशंसनीय कार्य है। मालवीय जी स्त्री, पुरूष, गरीब–अमीर, उच्चवर्ग, दलित वर्ग आदि में कोई भेदभाव नहीं रखते। राष्ट के सभी लोग समान है तो फिर क्यों अन्तर हो? इस विचार से उन्होंने लिखा है कि लड़कियों को लड़कों के समान ही शिक्षा देनी चाहिए दोनों को शिक्षा के समान अवसर देना चाहिए, और दलित वर्ग

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

के लोगों को भी उच्च वर्ग के साथ एक ही विद्यालय में पढ़ाया जावे। इस प्रकार सामाजिक भेदभाव को दूर किया।

शिक्षा और धर्म मे भी घनिष्टता होती है। उन्होंने सभी धर्मों का मंथन कर और उससे प्राप्त नवनीत को जनता को दे दिया। शिक्षा दर्शन के प्रत्येक बिन्दुओं को स्पष्ट कर गुणों का विवेचन किया। उनके द्वारा बताये गये सभी सिद्धान्त वर्तमान शिक्षा में अद्भुत परिवर्तन कर सकते है जो वर्तमान शिक्षा के लिए पूर्ण प्रासंगिक है। पं0 मदन मोहन मालवीय जी के कार्यों की प्रासंगिकता के सम्बंध में सर तेज बहादुर ने लिखा है कि ''यदि पं0 मदन मोहन मालवीय जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की नींव रखने तथा उसे आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पहुँचाने के अतिरिक्त और कुछ न भी किया होता तो भी भारत के इतिहास में उनका नाम अमर होता। मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 1916 में किया। उन्होंने उस समय भारतीय धर्म दर्शन में आस्था रखते हुए भी पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान कि शिक्षा की शुरूआत की थी। यह शुरूआत का ही परिणाम है कि देश में इन्जीनियरिंग और तकनीकी शिक्षा तथा आयुर्वेद शिक्षा का तेजी से विकास हुआ और हम अपना आर्थिक विकास कर सके।'' स्पष्ट है कि पं0 मदन मोहन मालवीय जिनका जीवन दर्शन, शिक्षा–दर्शन, सिद्धान्त एवं मानव एकता का आदर्श अलौकिक श्रेष्ठता के प्रति बोधक है, जिनका विकास सिद्धान्त अति मानवीय जीवन की भक्तित्यता का परिचायक है, जिनकी समस्त प्रेरणाओं में उज्ज्वल भविष्य का आमंत्रण है। हमारे लिए मानव जाति के लिए, वर्तमान शिक्षा के लिए विगत कल की अपेक्षा आज कही अधिक उपादेय है और उनकी यह उपादेयता आज की अपेक्षा कल के लिए और अधिक प्रासंगिक होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. आचार्य, पद्मनारायण, (1938), हमारे कुलपति मालवीय जी, वाराणसी: गीताधर्म प्रकाशन।

[2]. खन्ना, पीं0, (1981), शिक्षा दार्शनिक के रूप में किलपैट्रिक विलियम इर्ड का अध्ययन, गोरखपुर : शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र: गोरखपुर यूनिवर्सिटी।

[3]. गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता, अल्का, (2003), सांख्यिकीय विधियॉ, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।

[4]. बाबू, ए0एस0, (1978), पं0 मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन, शोध प्रबन्धन पी0एच0डी0 दर्शन एस0बीव यूनिवर्सिटी।

[5]. बुच, एम0बी0, (1972), ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली: Vol. IInd, IIIrd

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.